Dainik Jagran - New Delhi - 07 -02- 2011

इतिहास : उर्दू में पहली पांडुलिपि 'दीवानजादा' अप्रैल में होगी प्रकाशित

शोधार्थियों की राह होगी आसान

नई दिल्ली, जागरण ब्यूरो : इतिहास के शोधार्थियों के हाथों में जल्द ही 18वीं सदी में लिखी गई उर्दू की पहली पांडुलिपि होगी।

उत्तर भारत की स्थिति पर दिल्ली के शाह हातिम की लिखी गई पहली पांडुलिपि 'दीवानजादा' अप्रैल तक प्रकाशित हो जाएगी। प्राचीन काल से लेकर मुगल काल तक की दास्तां को बयां करने वाली फारसी में लिखी गई 'चहार गुलशन' भी जल्द ही उपलब्ध होगी।

भारतीय इतिहास के बाबत संस्कृति विभाग की कोशिश अब रंग लाने लगी है। शनिवार को अपने गठन के आठ साल पूरा कर चुके राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (एनएमएम) ने 2010-11 में ऐसी दुर्लभ 50 पांडुलिपियों को प्रकाशित करने का लक्ष्य तय किया है।

इन पर काम शुरू हो चुका है। दीवानजादा जहां इस श्रृंखला में पहली पांडुलिपि होगी, वहीं आने वाले महीनों में तत्कालीन दक्षिण भारतीय संस्कृति पर द्रविड़ भाषा में लिखी गई पांडुलिपि समेत अरबी व संस्कृत में लिखे गए महत्वपूर्ण तथ्य सामने होंगे। पांडुलिपियों के लिए एक राष्ट्रीय लाइब्रेरी बनाने का भी विचार संस्कृति मंत्रालय के विचारार्थ है।

अब तक 45 हजार से ज्यादा पांडुलिपियों को डिजिटल रूप दिया जा चुका है। तीसरे चरण की भी शुरुआत जल्द होगी।

सोमवार को वार्षिकोत्सव के अवसर पर एनएमएम नए दिशानिर्देश जारी करेगा। इसी मौके पर करीब दो लाख पांडुलिपियों का विवरण इंटरनेट पर डाला जाएगा। जाहिर है कि इतिहास के शोधार्थियों के लिए अब राह थोड़ी आसान होगी।

रंग लाई कोशिश

- राष्ट्रीय पांडुलिपि लाइब्रेरी स्थापित करने का संस्कृति मंत्रालय का इरादा